

डॉ. क्रेग कीनर, मैथ्यू व्याख्यान 1, सुसमाचार की विश्वसनीयता

© 2024 क्रेग कीनर और टेड हिल्डेब्रांट

यह मैथ्यू की पुस्तक, सत्र 1, द रिलायबिलिटी ऑफ द गॉस्पेल पर डॉ. क्रेग कीनर हैं।

मेरा नाम क्रेग कीनर है और मैंने मेडिन से शादी की है कांगो से मौसुंगा कीनर। मैंने मैथ्यू के सुसमाचार पर कुछ टिप्पणियाँ लिखी हैं, यही कारण है कि मुझे मैथ्यू पर यह शिक्षण श्रृंखला करने के लिए कहा गया है।

लेकिन मैं आपको यह भी बता दूँ कि मैथ्यू 23 में कहा गया है कि किसी भी व्यक्ति को रब्बी न कहें क्योंकि आपका एक ही शिक्षक है, यहां तक कि यीशु भी। और यही वह शिक्षक है जिसके बारे में हम विशेष रूप से मैथ्यू के सुसमाचार में सीखने जा रहे हैं। लेकिन इससे पहले कि हम मैथ्यू के सुसमाचार को शुरू करें, हमें सुसमाचार का परिचय देना होगा, जिसका शाब्दिक अर्थ है, सुसमाचार का अर्थ अच्छी खबर है, और सुसमाचार इसी बारे में है।

और वह वाक्यांश, अच्छी खबर, यशायाह 52:7, साथ ही कई अन्य अनुच्छेदों से आती है, लेकिन यह विशेष रूप से यशायाह 52.7 है जिसका उल्लेख नए नियम में किया गया है। पहाड़ों में उन दूतों के पैर कितने सुन्दर हैं जो समाचार लाते हैं, जो शांति की घोषणा करते हैं, जो शुभ समाचार लाते हैं, जो उद्धार की घोषणा करते हैं, जो सिव्योन से कहते हैं, तुम्हारा परमेश्वर राज्य करता है। इस संदर्भ में, यह भगवान के लोगों की बहाली और भगवान के सभी वादों की पूर्ति के बारे में है, जिसमें अंततः एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी शामिल है।

और यीशु के मंत्रालय में, यह बहाली पूरी होने लगी। और जब हम मैथ्यू के सुसमाचार को देखेंगे तो हम इसे भी देखेंगे। यह बहुत भारी जोर है क्योंकि मत्ती 1:1 के अनुसार, यीशु ही वह है जो पुनर्स्थापना लाता है, वह जो अपने लोगों को बचाएगा। अब, अर्थ मुख्य रूप से मैथ्यू की कथा में है, लेकिन पहले, हमें कुछ ऐतिहासिक प्रश्नों का सर्वेक्षण करने की आवश्यकता है।

यदि आप पूछते हैं कि ऐतिहासिक प्रश्न कितने महत्वपूर्ण हैं, तो हम जानते हैं कि वे मंत्रियों के लिए महत्वपूर्ण हैं। चूंकि पर्यवेक्षकों को परमेश्वर का कार्य सौंपा गया है, इसलिए उन्हें निर्दोष होने की आवश्यकता है और भरोसेमंद संदेश को दृढ़ता से पकड़ना चाहिए जैसा कि सिखाया गया है ताकि वे सही शिक्षण द्वारा दूसरों को प्रोत्साहित कर सकें और इसका विरोध करने वालों का खंडन कर सकें। और इसलिए, दूसरे शब्दों में, हमें आस्था को स्पष्ट करने के लिए तैयार रहने की जरूरत है और जब लोग आस्था के खिलाफ चुनौतियां खड़ी करते हैं तो उसकी रक्षा करने में सक्षम होना चाहिए।

सुसमाचार और सुसमाचार की ऐतिहासिक विश्वसनीयता के परिचय के रूप में वास्तव में मैथ्यू के सुसमाचार को शुरू करने से पहले हम इनमें से कई पर गौर करने जा रहे हैं। उन आपत्तियों में से एक जो अक्सर पश्चिम में उठाई जाती रही हैं, लेकिन कभी-कभी पश्चिम से परे भी उद्धृत की

जाती हैं, जिसे यीशु सेमिनार कहा जाता है, जिसमें पत्थरों के साथ मतदान किया गया था, जिस पर यीशु की बातें प्रामाणिक थीं। अब, वास्तव में, जहां तक मैं समझता हूं, उन्होंने केवल तभी वोट दिया जब मीडिया मौजूद था क्योंकि यह मीडिया का ध्यान आकर्षित करने का एक तरीका था।

लेकिन किसी भी मामले में, उन्होंने सोचा कि यीशु की अधिकांश बातें प्रामाणिक नहीं थीं, और कई पश्चिमी मीडिया आउटलेट्स ने उन्हें उद्धृत किया क्योंकि वे समाचार योग्य प्रतीत होते थे। और यह कई टीवी प्रस्तुतियों आदि पर सच रहा है और इसे दुनिया के अन्य हिस्सों में भी उद्धृत किया जा सकता है। अब, न्यू टेस्टामेंट के अधिकांश विद्वानों के संदर्भ में, न्यू टेस्टामेंट के अधिकांश विद्वान यहीं नहीं खड़े हैं।

लेकिन अगर आपकी मंडली में कोई आपसे कार्यक्रम के बारे में पूछे, तो आप क्या जवाब देंगे? आप कह सकते हैं, ठीक है, आपके पास टेलीविजन नहीं होना चाहिए। दरअसल, यदि आपने ऐसा नहीं किया होता तो शायद आपके पास अध्ययन के लिए अधिक समय होता। या जो भी आप चाहते हैं उस पर विश्वास करें।

यह एक सामान्य पश्चिमी प्रतिक्रिया है। या, ठीक है, अगर विद्वान ऐसा कहते हैं, तो यह सच होगा क्योंकि वे लंबे समय तक स्कूल गए और मैंने ध्यान नहीं दिया। या आप कह सकते हैं, मैंने छोड़ दिया।

मैं एक अलग करियर ढूंढने जा रहा हूं। या आप कुछ उचित उत्तर देने का प्रयास कर सकते हैं। उचित उत्तर देने के कई प्रयास किए गए हैं, और वास्तव में मुख्यधारा की छात्रवृत्ति उचित उत्तर प्रदान करती है।

लेकिन साथ ही, जो सुसमाचार की सटीकता का बचाव करने में विशेष रूप से सही हैं। आपके पास क्रेग इवांस, डैरेल बाख, बेन विदरिंगटन, मैं, क्रेग ब्लॉमबर्ग और अन्य हैं। जिसे हम अधिक मध्यमार्गी विद्वत्ता कहेंगे, वे विद्वान जो शायद ऐसा नहीं भी कह सकते, वे उस चीज़ से शुरुआत कर रहे हैं जिसे वे ऐतिहासिक रूप से प्रदर्शित कर सकते हैं।

और इसलिए, आप जानते हैं, जो चीजें इतिहास में हैं, आप इतिहास में सब कुछ साबित नहीं कर सकते क्योंकि यह बहुत समय पहले हुआ था और कुछ सबूत अभी भी आसपास नहीं हैं। लेकिन इस बात के पर्याप्त सबूत हैं कि मुख्यधारा के विद्वान, जो केवल ऐतिहासिक साक्ष्यों के साथ काम कर रहे हैं, अभी भी गॉस्पेल से यीशु के बारे में काफी कुछ जानते हैं, काफी बड़ी मात्रा में। कुछ विद्वान संशयवादी हैं और वे संशयपूर्ण आधार से आते हैं क्योंकि ज्ञानोदय के बाद से, पश्चिम में शिक्षा जगत ने बाइबिल के प्रति पूर्वाग्रह पाल रखा है, बड़े पैमाने पर क्योंकि इसने चमत्कारों के प्रति पूर्वाग्रह पाल रखा है।

इस तरह इसकी शुरुआत हुई। तो, हम थोड़ी देर में चमत्कारों के बारे में बात करेंगे। लेकिन जब आप ऐसे लोगों से मिलते हैं जो इस प्रकार के विचारों से प्रभावित होते हैं, तो हो सकता है कि वे ऐसे लोग हों जो इस तरह से प्रशिक्षित हों।

वे ऐसे लोग हो सकते हैं जो केवल बहाने ढूंढ रहे हैं, कभी-कभी विश्वास नहीं करते। और इसलिए, वे इंटरनेट पर कुछ लोकप्रिय चीजों का हवाला देते हैं। हम कहाँ शुरू करें? हम इसका उत्तर कैसे देंगे? खैर, सबसे पहले हम शैली के मुद्दे पर गौर करते हैं।

शैली उस प्रकार का लेखन है जो कुछ होता है। अब, यह सभी मुद्दों का समाधान नहीं करता है, लेकिन यह शुरुआत करने के लिए एक अच्छी जगह है। यह वैसा ही है जैसे जब आपके पास हथौड़ा हो, तो हथौड़े का उपयोग किस लिए किया जा सकता है? खैर, आप इसे एक हथियार के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं।

आप इसे डोरस्टॉप की तरह इस्तेमाल कर सकते हैं। लेकिन मूल रूप से, जिस तरह से हथौड़े को डिज़ाइन किया गया है, और इसके डिज़ाइन का उद्देश्य इसके डिज़ाइन में स्पष्ट है। इसे कीलों को ठोकने के लिए, या कम से कम उस सामान्य प्रकार के हथौड़े के लिए डिज़ाइन किया गया है जिसके बारे में हम बात करते हैं।

तो, सुसमाचार की शैली क्या है? वे क्या करने के लिए डिज़ाइन किए गए थे? कुछ लोग कहते हैं, सुसमाचार अद्वितीय हैं। खैर, एक अर्थ में सुसमाचार अद्वितीय हैं क्योंकि वे एक अद्वितीय व्यक्ति के बारे में बात करते हैं। लेकिन जबकि यीशु अद्वितीय थे, हमें व्यापक प्रकार का प्रश्न पूछना होगा।

खैर, जब आपके पास किसी विशेष ऐतिहासिक व्यक्ति के बारे में ऐसा कोई काम हो, तो इसे क्या कहा जाता था? और प्राचीन काल के साथ-साथ आधुनिक काल में भी इसे जीवनी कहा जाता था। अब, शायद 30 साल पहले के विपरीत, आज अधिकांश विद्वान इतिहास के माध्यम से आप में से अधिकांश के साथ सहमत हैं, जो यह है कि सुसमाचार जीवनियाँ हैं। यह तर्क कई विद्वानों द्वारा दिया गया है, सबसे अधिक रिचर्ड ब्यूरिज द्वारा एक शोध प्रबंध में जो कैम्ब्रिज द्वारा प्रकाशित किया गया था।

खैर, जब हम पूछते हैं कि क्या वे जीवनियाँ हैं, तो अधिकांश इतिहास में, लोग मान लेते हैं कि सुसमाचार जीवन थे। ग्रीक में, जीवनी, यीशु की जीवनियाँ। लेकिन 1915 में, कुछ विद्वानों ने देखा कि गॉस्पेल आधुनिक पश्चिमी जीवनियों की तरह नहीं थे और इसलिए उन्होंने दावा किया कि वे जीवनियाँ नहीं थीं।

हालाँकि, अब तक, अधिकांश विद्वानों ने यह निर्णय ले लिया है कि चर्च आखिरकार सही था और वे जीवनियाँ थीं। कभी-कभी आपको सावधान रहना होगा क्योंकि एक या दो पीढ़ी से आपके पास ऐसे छात्र हैं जिन्हें सिखाया जा रहा है कि वे जीवनियाँ नहीं हैं और वे यह सोचकर बाहर जा रहे हैं और फिर विद्वान अपना मन बदल लेते हैं। लेकिन इसके साक्ष्य पर वापस जाएं तो, गॉस्पेल जीवनियाँ हैं, लेकिन वे प्राचीन जीवनियाँ हैं, आधुनिक जीवनियाँ नहीं।

और यही भ्रम का कारण था। आधुनिक जीवनियाँ आमतौर पर कालानुक्रमिक क्रम में होती हैं। प्राचीन जीवनियों में यह आवश्यक नहीं था।

वास्तव में, उनमें से अधिकांश को स्थानिक रूप से व्यवस्थित किया गया था। इसलिए, जब मैथ्यू और ल्यूक में कभी-कभी अलग क्रम में घटनाएं होती हैं, तो यह कोई समस्या नहीं है। वास्तव में, मैथ्यू विशेष रूप से, सुसमाचार जिसे हम विस्तार से देखने जा रहे हैं, चीजों को शीर्ष पर व्यवस्थित करता है।

मैथ्यू को चीजों को शीर्ष पर व्यवस्थित करना बहुत पसंद है इसलिए उपदेश देना आसान है। आमतौर पर, आधुनिक जीवनियाँ व्यक्ति के जन्म के साथ या बहुत पहले शुरू हो जाती हैं। प्राचीन जीवनियों की ज़रूरत नहीं थी।

मैथ्यू और ल्यूक की शुरुआत यीशु के जन्म से होती है। लेकिन मार्क, जॉन द बैपटिस्ट के उपदेश के बाद, मूल रूप से यीशु के सार्वजनिक मंत्रालय से शुरू होता है। खैर, कई प्राचीन जीवनियाँ व्यक्ति के वयस्क करियर से शुरू हुईं।

तो फिर, यह आश्चर्य की बात नहीं है। गॉस्पेल प्राचीन जीवनियों की शैली में फिट बैठते हैं। एक जीवनी लगभग एकमात्र प्रकार का कार्य था जो एक ही चरित्र पर केंद्रित था।

जीवनियाँ लंबाई की एक विशेष सीमा के अंतर्गत आती हैं, जो कि हमारे गॉस्पेल में मौजूद लंबाई की सीमा भी है। और जीवनी का उद्देश्य केवल व्यक्ति की प्रशंसा करना नहीं होता। कभी-कभी आत्मकथाएँ किसी व्यक्ति की प्रशंसा करती हैं।

कभी-कभी वे किसी व्यक्ति की आलोचना करते थे। आमतौर पर, उन्होंने प्रत्येक में से कुछ न कुछ किया। जाहिर है, यदि आप देहधारी परमेश्वर के बारे में लिख रहे हैं, तो यह सकारात्मक होगा।

लेकिन जीवनीकारों को केवल सकारात्मक बातें कहने की आवश्यकता नहीं थी। और आप सुएटोनियस को पढ़ते हैं, आप देख सकते हैं कि आमतौर पर प्राचीन जीवनियों में एक मिश्रण होता है। जीवनियाँ मुख्य रूप से ऐतिहासिक लेखन थीं, मेरे एक प्रोफेसर ने जो कहा था उसके विपरीत।

दरअसल, गॉस्पेल में मेरे पहले डॉक्टरेट पाठ्यक्रम के दौरान, प्रोफेसर ने कहा कि मार्क का गॉस्पेल एक प्राचीन जीवनी है, प्राचीन जीवनियाँ काल्पनिक थीं, और इसलिए मार्क का गॉस्पेल काल्पनिक था। अब, समस्या उसके तर्क के तर्क में नहीं थी। यह उनकी जानकारी से था।

उन्होंने दावा किया कि जीवनियाँ काल्पनिक थीं। और बाद में मैंने यह मुद्दा उनके सामने उठाया। मैंने कहा, ठीक है, अधिकांश प्राचीन जीवनियाँ वास्तव में ऐतिहासिक प्रकार का लेखन थीं।

और मैंने इसे विस्तार से समझाया, जिसे विभिन्न क्लासिकिस्टों आदि ने भी नोट किया है। और मेरे स्पष्टीकरण के अंत में उन्होंने कहा, ठीक है, मुझे नहीं पता। मैं प्राचीन जीवनी के बारे में कुछ नहीं जानता।

इसका मतलब यह नहीं है कि आप कभी भी अपने प्रोफेसरों की बात न सुनें। चूंकि मैं एक प्रोफेसर हूँ, इसलिए मुझे प्रोफेसर पसंद हैं। लेकिन कहने का तात्पर्य यह है कि हर कोई आपसे जो भी कहता है उस पर हमेशा विश्वास न करें।

आपको वापस जाकर जानकारी जांचनी होगी। लेकिन मैं आपको यहां सबसे अच्छी जानकारी देने की कोशिश कर रहा हूँ जो मेरे पास उपलब्ध है। और मैंने वास्तव में प्राचीन जीवनियाँ पढ़ी हैं।

मैंने प्लूटार्क, सुएटोनियस और अन्य प्राचीन जीवनियाँ पढ़ी हैं। इसलिए, मैं उस प्रोफेसर की तरह व्यवहार नहीं कर रहा हूँ। शैली सभी ऐतिहासिक प्रश्नों का समाधान नहीं करती है, लेकिन यह सबूत के बोझ को बदल देती है।

क्योंकि यदि कोई चीज़ प्राचीन जीवनी थी, तो इसका मतलब है कि यह एक ऐतिहासिक चरित्र के बारे में थी और यह ऐतिहासिक जानकारी से संबंधित थी। आपके पास हाल के इतिहास में किसी के बारे में लिखे गए उपन्यास नहीं हैं। उपन्यास आमतौर पर पूरी तरह से काल्पनिक पात्रों के बारे में होते हैं।

लेकिन जब उपन्यास प्राचीन इतिहास में कभी-कभार वास्तविक पात्रों के बारे में होते हैं, और जब वे रोमांस नहीं होते थे, जो दुर्लभ भी था, तो वे किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में होते थे जो बहुत पहले रहता था, न कि किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में जो हाल के दिनों में रहता था। गॉस्पेल में हमारे पास जो कुछ है वह उपन्यास नहीं हो सकता। यह केवल एक प्राचीन जीवनी ही हो सकती है।

उपन्यासों में स्पष्ट स्रोतों का अभाव था। उनके पास ल्यूक की तरह ऐतिहासिक प्रस्तावना या प्रस्तावना नहीं थी। और नैतिक पाठ पढ़ाने के संदर्भ में, जैसा कि गॉस्पेल करते हैं, प्राचीन काल में, उपन्यासकार आमतौर पर नैतिक पाठ पढ़ाने की कोशिश नहीं कर रहे थे।

इतिहासकारों और जीवनीकारों ने नियमित रूप से अपने कार्यों के माध्यम से नैतिक, राजनीतिक और कभी-कभी धार्मिक पाठ पढ़ाने की कोशिश की। और यही हम फिर से सुसमाचार में पाते हैं। अब आप कह सकते हैं, ठीक है, गॉस्पेल पढ़ने में मज़ेदार हैं।

और कुछ लोगों ने कहा है, ठीक है, देखो, उपन्यास रोमांचक हैं, वे साहसिक हैं। लेकिन यह प्राचीन जीवनियों के बारे में भी सच है। वे पढ़ने में मनोरंजक होने के लिए थे।

उपन्यास और इतिहासलेखन और जीवनी के बीच अंतर यह था कि इतिहासलेखन और जीवनी का उद्देश्य केवल मनोरंजक नहीं था, बल्कि जानकारीपूर्ण भी था। वे वास्तविक जानकारी के आधार पर पढ़ाने के लिए थे। खैर, यह मान लिया गया कि अच्छे जीवनीकार काफी हद तक सटीक थे, यानी, वे घटनाओं से निपट रहे थे।

विस्तार से वे कितने सटीक थे? खैर, यहां शैली समस्या का समाधान नहीं करती क्योंकि यह विशेष जीवनी लेखक पर निर्भर करती है। विशेष जीवनीकारों को विवरणों पर काफी स्वतंत्रता हो सकती थी, भले ही उन्हें घटनाओं का आविष्कार करने की अनुमति नहीं थी। तो हम विशेष मामलों का मूल्यांकन कैसे करते हैं? खैर, एक सवाल यह है कि क्या वे हाल के अतीत या सुदूर

अतीत के बारे में लिख रहे थे? और दूसरा सवाल यह है कि वे अपने स्रोतों से कितनी निकटता से जुड़े रहे? तो, हम उन दोनों प्रश्नों पर गौर कर सकते हैं।

खैर, जीवनी लेखक अक्सर किस प्रकार के स्रोतों का उपयोग करते थे? सुदूर अतीत के बारे में लिखते समय, वे अक्सर स्वीकार करते थे कि उन्होंने किंवदंतियों का उपयोग किया है। फिर भी, जब भी संभव हुआ, उन्होंने अक्सर बड़ी संख्या में अलग-अलग स्रोतों का नाम लेकर हवाला दिया और कई लोगों ने उनके स्रोतों का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया। अब, कभी-कभी सुदूर अतीत के बारे में लिखते समय भी वे बहुत सटीक हो सकते हैं।

हम विभिन्न स्रोतों, बाद के स्रोतों, पहले के स्रोतों आदि की तुलना करके इसे फिर से बता सकते हैं। लेकिन हाल के दिनों के बारे में लिखते समय उन्होंने कोई माफ़ी नहीं मांगी, खैर, हमारे पास इस जानकारी को सत्यापित करने का कोई तरीका नहीं है। हाल के अतीत के बारे में लिखते समय, वे अक्सर चश्मदीदों से सलाह लेते थे या वे उन लोगों से सलाह लेते थे जिन्होंने चश्मदीदों से सलाह ली थी।

वे उन लोगों पर निर्भर थे जिन्होंने उनसे पहले ही इन चीज़ों के बारे में लिखा था। इसलिए, जब वे हाल के अतीत, पिछली या दो पीढ़ियों के बारे में लिख रहे थे, तो आम तौर पर वे बहुत सटीक होते थे। और इसका परीक्षण किया जा सकता है, और मैंने इस पर काम किया है और कई मामलों में इसका परीक्षण किया है।

अब, इन कृतियों की रचना कैसे की गई? खैर, आम तौर पर एक लेखक जो स्वयं प्रत्यक्षदर्शी नहीं था, वह एक मुख्य स्रोत से शुरुआत करेगा। कभी-कभी कोई प्रत्यक्षदर्शी भी किसी अन्य स्रोत का उपयोग कर सकता है। तो, कुछ लोग कहते हैं, अच्छा, यदि मैथ्यू एक प्रत्यक्षदर्शी होता तो मैथ्यू मार्क का उपयोग कैसे कर सकता था? आप जानते हैं, इस बात पर बहस चल रही है कि क्या मैथ्यू वही था जिसे हम मैथ्यू कहते हैं।

लेकिन भले ही मैथ्यू प्रत्यक्षदर्शी था, फिर भी वह मार्क का उपयोग कर सकता था, ठीक उसी तरह जैसे कुछ शताब्दियों पहले ज़ेनोफ़न ने किसी ऐसी चीज़ का विवरण लिखा था जिसे उसने स्वयं अनुभव किया था। वह इस अभियान में नेताओं में से एक थे, लेकिन वह पुराने स्रोत का भी उपयोग करते हैं क्योंकि उस व्यक्ति ने उनसे पहले प्रकाशित किया था और सभी को उम्मीद थी कि आप उस स्रोत का उपयोग करेंगे। वे अपने मुख्य स्रोत के आसपास अन्य स्रोतों को बुनेंगे, और फिर काम को दोस्तों के छोटे समूहों में या कभी-कभी भोजनों में या सार्वजनिक वाचन में सार्वजनिक रूप से पढ़ा जाएगा।

और फिर जो फीडबैक उन्हें सुनने वाले लोगों से मिलेगा, उसके आधार पर वे, विशेष रूप से इसके बारे में, अच्छा, आप इसे बेहतर ढंग से कह सकते थे इत्यादि, वे इसे संशोधित करेंगे। अब, प्रकाशन विधियों के संदर्भ में, आकार का मतलब व्यय है। इसलिए, लंबे दस्तावेज़ों को प्रकाशित करने के लिए धन की आवश्यकता होती है।

जब आप उदाहरण के लिए, रोमियों के पत्र के बारे में सोचते हैं, तो रोमियों को पॉल का पत्र, 16 अध्याय, कुछ प्राचीन पत्र इतने लंबे थे। वह एक महंगा पत्र था। एक विद्वान, रैंडी रिचर्ड्स ने गणना की है कि अमेरिकी मुद्रा में केवल पेपिरस रखने और आम तौर पर किसी को उस दस्तावेज़ को लिखने के लिए लगभग 2,000 डॉलर का खर्च आता होगा।

खैर, मैथ्यू का सुसमाचार उससे दोगुना लंबा है। तो, यह एक प्रमुख उपक्रम था। यह कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जिसे किसी ने अपने सिर के ऊपर से लिखा हो।

यह कुछ ऐसा है जिसके बारे में उसने सोचा। उन्होंने लोगों के समूहों के सामने अभ्यास किया। और फिर अंततः इसका अंतिम संस्करण लिख लिया जाता है और प्रसारित किया जाने लगता है।

और यह एक प्रमुख उपक्रम था। सुसमाचार वे हैं जिन्हें आधार दस्तावेज़ कहा जाता है। वे प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ हैं, किसी के सिर के ऊपर से लिखी गई कोई चीज़ नहीं।

प्रत्येक प्राचीन दृष्टि से एक पुस्तक थी। हम बाइबल को एक किताब के रूप में सोचते हैं। यह किताबों का संग्रह है।

प्राचीन काल में, किताबें केवल इतनी लंबी हो सकती थीं या, आप जानते हैं, स्कॉल उन्हें बहुत अच्छी तरह से पकड़ नहीं पाता था या आपके पास बहुत अजीब आकार का स्कॉल होता था। मैथ्यू एक बहुत बड़े स्कॉल के आकार का है। प्रकाशन के साधनों के संदर्भ में, फिर से, कार्यों को भोजों और सार्वजनिक वाचनों में प्रसारित किया जाएगा।

इच्छुक श्रोता अपनी प्रतियों के लिए अनुरोध और भुगतान कर सकते हैं। यदि कोई साक्षर व्यक्ति चाहे तो वह इसे हाथ से कॉपी कर सकता है। उस समय, बड़े पैमाने पर उत्पादन का मतलब श्रुतलेख लेने वाले शास्त्रियों से भरा कमरा था।

यदि कोई दस्तावेज़ पढ़ेगा, तो वे सभी उसे लिख रहे होंगे। यह किसी कार्य का बड़े पैमाने पर उत्पादन करने के सबसे करीब था। यदि किसी कार्य को अच्छी प्रतिष्ठा मिलती है, तो इससे अधिक पठन और अधिक सार्वजनिक मांग उत्पन्न होती है।

प्रारंभिक विश्वासियों के लिए, संभवतः यह जिस तरह से घटित हुआ होगा वह प्रारंभिक चर्च सेटिंग में होगा। प्राचीन काल में कई सार्वजनिक पाठ भोजों में होते थे। खैर, प्रारंभिक चर्च की भोज सेटिंग उनकी चर्च सेवा के हिस्से के रूप में प्रभु भोज थी।

इतिहास और जीवनी में ऐतिहासिक विश्वसनीयता की एक सीमा थी, जैसा कि मैंने उस प्रोफेसर को बताया और बाद में उन्होंने इसे स्वीकार किया। प्लूटार्क और लिवी चीजों को थोड़ा मसालेदार बना सकते थे, खासकर जब वे सुदूर अतीत के लोगों के बारे में लिख रहे थे। लेकिन टैसीटस और सुएटोनियस ऐसे इतिहासकार और जीवनीकार थे जिन्होंने हाल के अतीत के बारे में लिखा।

वे अपने तथ्यों पर बहुत करीब से टिके रहे। कभी-कभी, और विशेष रूप से जब वे किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में लिख रहे होते हैं जो उन्हें पसंद नहीं है, तो वे आपको हर उस गंदगी के बारे में

बता देते हैं जो हर कोई इन लोगों के बारे में कहता है। लेकिन वे अपने स्रोतों पर बहुत करीब से टिके रहे।

और फिर आपके पास जोसेफस है। जोसेफस एक... ये रोमन इतिहासकार थे। जोसेफस पहली सदी का यहूदी इतिहासकार था और वह एक ओर प्लूटार्क और लिवी और दूसरी ओर सुएटोनियस और टैसिटस के बीच में था।

अपनी आत्मकथा में, जोसेफस खुद को संदिग्ध रूप से अच्छा दिखाता है। वह यहूदी-रोमन युद्धों का सारांश इस प्रकार प्रस्तुत करता है मानो यह लगभग एक दुर्घटना हो। और फिर भी, जब वह विवरणों के साथ काम कर रहा होता है, तो पुरातत्व अक्सर उसकी पुष्टि करता है, कैसरिया मैरिटिमा के बंदरगाह में संरचनाओं के विवरण तक उसकी पुष्टि करता है।

यह यरूशलेम में विशेष संरचनाओं तक उसकी पुष्टि करता है। यह हेरोदेस के शयनकक्ष की दीवार पर लगे पेंट के रंग से उसकी पुष्टि करता है। मुझे नहीं पता कि जोसेफस की हेरोदेस के शयनकक्ष तक पहुंच कैसे थी, लेकिन किसी भी मामले में, उसके पास इस सब के लिए अच्छे स्रोत थे।

और अपने विवरण में, वह काफी सटीक हो सकता है। ऐतिहासिक मानकों के संदर्भ में, क्या अपेक्षित था? पूर्वजों की मांग थी कि इतिहासकार तथ्यों से निपटें। वे, विशेषकर विशिष्ट इतिहासकार थे, जो कि न्यू टेस्टामेंट के लेखक नहीं हैं, लेकिन विशिष्ट इतिहासकार अलंकारिकता में बहुत रुचि रखते थे।

वे चीजों को इस तरह से आकार देने में बहुत रुचि रखते थे जिससे उनके दर्शकों तक अच्छी तरह से संवाद हो सके। निम्न वर्ग के संदर्भ में, वे चीजों को इस तरह से आकार देने में बहुत रुचि रखते थे जो अच्छी कहानी कहने की तकनीकों के अनुकूल हो। लेकिन घटनाएँ वास्तविक होनी चाहिए।

सवाल सिर्फ यह था कि आप उन्हें कैसे प्रस्तुत करेंगे। और आप आज किसी भी सच्ची कहानी के साथ ऐसा कर सकते हैं। मैंने यह किया है और दूसरों ने भी अपनी जीवनियाँ या दूसरों की जीवनियाँ लिखकर ऐसा किया है।

इसे दिलचस्प बनाने के लिए बस सबसे दिलचस्प जानकारी चुनें। आप इसे कुछ खास तरीकों से दोहराते हैं जो रहस्य को उजागर करते हैं। कहानी कहने की एक तकनीक है।

आप एक निश्चित बिंदु पर टूट सकते हैं और दूसरे बिंदु पर आगे बढ़ सकते हैं। जिस तरह से आप सामग्री को व्यवस्थित करते हैं वह पाठक को आकर्षित करता है। खैर, बयानबाजी की अनुमति थी, लेकिन बहुत ज़्यादा होने पर आलोचना को आमंत्रित किया गया।

और यही बात कहानी कहने के बारे में भी सच होगी। जीवनियाँ इतिहास की तुलना में कुछ अधिक की अनुमति देती हैं, लेकिन उन्हें सटीक जानकारी पर आधारित होना चाहिए। फिर, उपन्यास और इतिहास के बीच का अंतर।

लुकियान दूसरी शताब्दी में एक वक्ता और व्यंग्यकार थे। उन्होंने खूब व्यंग्य लिखे। लेकिन उन्होंने कहा कि अच्छे जीवनीकारों को चापलूसी से बचना चाहिए जो घटनाओं को गलत साबित करती है और केवल बुरे इतिहासकार ही डेटा बनाते हैं।

प्लिनी द यंगर, दूसरी सदी की शुरुआत में एक राजनेता, राजनेता थे। और उन्होंने कहा कि इतिहास के बारे में जो विशिष्ट है वह सटीक तथ्यों के प्रति उसकी चिंता है। इसलिए यह सिर्फ इतिहासकारों द्वारा अपने व्यापार के बारे में डींगें हांकने का मामला नहीं है।

इसे अन्य लोगों ने भी पहचाना। अब, पॉलीबियस न्यू टेस्टामेंट के समय से पहले लिखने वाला एक इतिहासकार था। और वह कहते हैं कि इतिहास को किसी के कार्यों के अनुसार प्रशंसा और दोष देना चाहिए।

दूसरे शब्दों में, यदि आप किसी के बारे में कुछ अच्छा या किसी के बारे में बुरा कहने जा रहे हैं, तो बेहतर होगा कि वह सच हो। फिर से, प्लिनी द यंगर इस बात पर जोर देता है कि आप बयानबाजी का उपयोग कर सकते हैं बशर्ते कि आपका आधार तथ्य हो। इसके अलावा, अरस्तू, न्यू टेस्टामेंट से कुछ शताब्दियों पहले लिखने वाला एक दार्शनिक था।

कविता और इतिहास में अंतर उनके स्वरूप का नहीं है। आप इतिहास को पद्य में लिख सकते हैं, लेकिन उनकी सामग्री। इतिहास को इस बात से निपटना चाहिए कि क्या हुआ, न कि केवल इस बात से कि क्या हो सकता है।

हाल के पात्रों की जीवनियों के संदर्भ में, वे अपने स्रोतों के करीब रहे। उनका उद्देश्य चीजों का आविष्कार करना नहीं था। यह उपन्यासों से काफी अलग है।

और मैं आपको यहां एक ठोस उदाहरण दे सकता हूं, जो सुएटोनियस का है। वह दूसरी सदी की शुरुआत में लिखने वाला एक रोमन इतिहासकार है। वह रोमन सम्राट ओथो के बारे में लिख रहा है।

मैंने उसकी तुलना रोमन इतिहासकार टैसीटस और यूनानी जीवनी लेखक प्लूटार्क के वृत्तांतों से की, जिन्होंने ओथो के बारे में भी लिखा था। अब, आपने ओथो के बारे में नहीं सुना होगा। आपने ऑगस्टस सीज़र के बारे में सुना होगा।

ऑगस्टस काफी लंबे समय तक जीवित रहे और उनके पास एक बेहतर प्रचार मशीन थी। लेकिन ओथो बहुत ही अल्पायु सम्राट था। तो, यह एक संक्षिप्त जीवनी थी।

मेरे लिए जाकर तुलना करना आसान था। और जैसे लोग मैथ्यू, मार्क और ल्यूक की तुलना करेंगे, मैंने इन विभिन्न लेखकों की तुलना ओथो के बारे में उनके द्वारा कही गई बातों के आधार पर की। और जो मैंने पाया वह वैसा ही था जैसा आप गॉस्पेल में पाते हैं।

आपको बहुत सारे ओवरलैप मिलते हैं. प्रत्येक विशिष्ट है. लेकिन आपको काफी ओवरलैप मिलता है, भले ही यह लेखक इस बिंदु पर जोर देना चाहता था, यह लेखक उस बिंदु पर जोर देना चाहता था।

मुझे सुएटोनियस और अन्य दो लेखकों में से प्रत्येक के बीच पत्राचार के लगभग 50 बिंदु मिले, और पत्राचार के कई अन्य बिंदु भी मिले। लेकिन ध्यान रखें, सुएटोनियस की ओथो की जीवनी केवल 28 पैराग्राफ लंबी है। यह केवल लगभग 2,000 शब्द है।

यह मार्क के गॉस्पेल की लंबाई का लगभग पांचवां हिस्सा है। इसलिए, यदि मार्क उसी प्रकार की ऐतिहासिक पद्धति का उपयोग कर रहा था जैसा कि सुएटोनियस एक जीवनी लेखक के रूप में उपयोग कर रहा था, तो हम उम्मीद कर सकते हैं कि यदि हमारे पास उसी प्रकार के स्रोत होते, तो हम मार्क के बहुत ही संक्षिप्त सुसमाचार में पत्राचार के 250 बिंदु पा सकते थे। मार्क की लंबाई मैथ्यू से आधी है।

तो, मैं इस सब के बारे में जो कह रहा हूँ वह यह है कि जब हम पीछे जाते हैं और वास्तव में प्राचीन जीवनी का उसके समय से उपलब्ध अन्य स्रोतों के साथ परीक्षण करते हैं, तो ये सभी जीवनियां लगभग उसी अवधि के दौरान लिखी गई थीं, जब मार्क यीशु के समय के बाद लिख रहे थे। जब आप इनकी तुलना करते हैं, तो यह पता चलता है कि प्राचीन जीवनी लेखक ऐतिहासिक जानकारी में रुचि रखते थे। वे बातें अपने सिर के ऊपर से नहीं बना रहे थे।

और हमें महत्वपूर्ण ऐतिहासिक जानकारी देने वाले सुसमाचारों पर भरोसा करने में सक्षम होना चाहिए, भले ही हम ईसाई शुरुआती बिंदु से शुरू नहीं कर रहे हों। हम बस एक इतिहासकार के रूप में शुरुआत कर रहे थे, डेटा की जांच कर रहे थे, डेटा देख रहे थे, और कह रहे थे, अच्छा, हम यीशु के बारे में क्या जान सकते हैं? और मेरा मानना है कि इससे हमें यीशु पर विश्वास करना चाहिए। लेकिन किसी भी मामले में, यह मानते हुए कि जीवनीकार काफी हद तक सटीक थे, वे अपने सभी विवरणों में कितने सटीक थे? खैर, यहीं से विद्वानों ने वह खोज शुरू की जिसे हम ऐतिहासिक-महत्वपूर्ण पद्धतियाँ कहते हैं।

और मैं इन पर बहुत अधिक समय खर्च नहीं करूँगा क्योंकि इन्हें अक्सर अन्यत्र कवर किया जाता है। लेकिन यदि आपके पास टिप्पणियों तक पहुंच है, तो आप उन्हें दूँढ लेंगे, आप इन्हें पार कर जाएंगे। ये स्रोत आलोचना, संसाधन इतिहास, स्वरूप इतिहास और पुनर्लेखन इतिहास जैसे मुद्दे हैं।

स्रोत इतिहास. 19वीं सदी में इतिहासकारों ने सुसमाचारों के स्रोतों की जांच शुरू कर दी। अब, कुछ लोग कहते हैं, बाइबल परमेश्वर का वचन है।

यह कभी भी स्रोत नहीं होगा. यह कभी भी स्रोतों का उपयोग नहीं करेगा. लेकिन यदि आप वास्तव में सभी जगह बाइबिल के पाठों को देखें, तो यह कहता है कि वे स्रोतों का उपयोग करते हैं।

मेरा मतलब है, आपके पास भगवान के युद्धों की पुस्तक है। यह जशर की किताब में लिखा है। और फर्स्ट एंड सेकेंड क्रॉनिकल्स पाठक को राजाओं के एक काम का संदर्भ देता है, जो हमारे पहले और दूसरे राजाओं का नहीं है, लेकिन उसे लगभग 10 बार संदर्भित करता है।

और प्रथम और द्वितीय राजा इतिहास की एक पुस्तक को संदर्भित करते हैं, हमारे इतिहास की पुस्तक को नहीं, बल्कि 30 से अधिक बार। अच्छा, क्या गॉस्पेल कभी स्रोतों का उपयोग करते हैं? ल्यूक का कहना है कि उन्हें कई स्रोत ज्ञात थे। बहुतों ने उन चीजों का लेखा-जोखा तैयार करने का बीड़ा उठाया है जो हमारे बीच पूरी हुई हैं।

अनेक का मतलब सिर्फ एक व्यक्ति नहीं है। इसका मतलब सिर्फ दो लोग नहीं हैं। कई लोगों का मतलब है कि जब तक ल्यूक लिख रहा है, तब तक कई लोग इन चीजों के बारे में पहले ही लिख चुके हैं।

खैर, यह हमारे लिए अच्छी खबर है। इसका मतलब यह है कि सुसमाचार के लेखक केवल बातें नहीं बना रहे थे। वे वही कर रहे थे जो अच्छे जीवनीकारों को करना चाहिए।

वे उन स्रोतों पर निर्भर थे जो उनके लिए उपलब्ध थे। अब, वे चीजों की उस तरह नकल नहीं कर सकते जिस तरह हम आज करते हैं। उनके पास कॉपी मशीनें नहीं थीं।

निस्संदेह, उनके पास इंटरनेट नहीं था। उनके पास स्कैनर नहीं थे। उनके पास ये सब चीजें नहीं थीं जो आज हमारे पास हैं।

उनके पास प्रकाशन गृह नहीं थे। लेकिन लगभग सभी लोग स्वीकार करते हैं कि मैथ्यू, मार्क और ल्यूक आपस में घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। आप इसे तब देख सकते हैं जब आप देखते हैं कि मार्क का लगभग 90 प्रतिशत सुसमाचार मैथ्यू में भी किसी न किसी रूप में प्रकट होता है।

उनके नब्बे प्रतिशत खाते मैथ्यू में भी दिखाई देते हैं। और यह महत्वपूर्ण है क्योंकि याद रखें कि जॉन क्या कहता है। जॉन का कहना है कि दुनिया में वे सभी किताबें शामिल नहीं हो सकतीं जो यीशु के बारे में लिखी जाएंगी।

अब, यह अतिशयोक्तिपूर्ण हो सकता है, आपका ध्यान खींचने के लिए एक अलंकारिक अतिशयोक्तिपूर्ण कथन। लेकिन मुद्दा यह है कि यीशु के बारे में बहुत सी बातें बताई जा सकती हैं। और फिर भी, मैथ्यू मार्क द्वारा बताई गई बहुत सी बातें बताता है।

क्यों? संभवतः मार्क उन स्रोतों में से एक है जिनका वह उपयोग करता है। अब इस बात पर सभी विद्वान सहमत नहीं हैं। कई विद्वान सोचते हैं कि मैथ्यू ने सबसे पहले लिखा था।

और उसके कारण हैं। लेकिन अधिकांश विद्वान आज सोचते हैं कि मार्क हमारे सुसमाचारों में से पहला है जो बच गया है, कि उसे पीटर से जानकारी मिली थी, जैसा कि प्रारंभिक परंपरा कहती है। और वह यीशु स्पष्ट रूप से स्रोत है।

फिर आपके पास मौखिक परंपरा और शायद नोट्स हैं। मार्क के पास यह एक प्रत्यक्षदर्शी से है। ऐसी भी सामग्री है जिसे कुछ विद्वान क्यू कहते हैं। यह वह सामग्री है जो मैथ्यू और ल्यूक में है जो मार्क से प्राप्त नहीं हुई है।

यह ओवरलैप होता है। और फिर अन्य स्रोत जो अब हमारे पास उपलब्ध नहीं हैं। मैथ्यू के पास इस प्रकार के सभी स्रोत हैं जिनका वह उपयोग कर सकता है।

और ल्यूक के पास इस प्रकार के सभी स्रोत हैं जिनका वह उपयोग कर सकता है। अब, इसके बारे में जो याद रखना महत्वपूर्ण है वह सभी विवरण नहीं है, बल्कि सिर्फ इतना है कि अधिकांश विद्वान सोचते हैं कि मैथ्यू और ल्यूक दोनों ने मार्क और कुछ अन्य साझा सामग्री का भी उपयोग किया है जिसे विद्वान क्यू कहते हैं। विद्वान इस बात पर बहस करते हैं कि क्यू वास्तव में कैसा दिखता था। और हम उस सब में नहीं पड़ेंगे।

लेकिन यह विद्वानों का विशाल बहुमत है, उदार और रूढ़िवादी दोनों और बीच में हर जगह। लेकिन फिर, यह सभी विद्वान नहीं हैं। अब, मेरा मानना है कि मैथ्यू ने कई कारणों से मार्क का इस्तेमाल किया।

एक यह है कि मैथ्यू मार्क को संक्षिप्त करने के तरीके में सुसंगत पैटर्न प्रदर्शित करता है। ल्यूक निश्चित रूप से अधिक परिष्कृत दर्शकों के लिए मार्क के व्याकरण को साफ़ करता है। यह बहुत कम संभावना है कि मार्क ने भिन्न प्रकार के दर्शकों के लिए व्याकरण बदल दिया होगा।

इसके अलावा, जब मैथ्यू पुराने नियम को उद्धृत करता है, तो वह इसे अपना स्वयं का अनुवाद करके या मानक ग्रीक अनुवाद के अलावा किसी अन्य अनुवाद का उपयोग करके उद्धृत करता है, सिवाय इसके कि जहां वह मार्क की सामग्री का उपयोग कर रहा है। मार्क हमेशा मानक ग्रीक अनुवाद उद्धृत करता है। मैथ्यू जहाँ कहीं भी मार्क के साथ ओवरलैप होता है, मानक ग्रीक अनुवाद का उपयोग करता है।

तो फिर, यह सोचने का एक कारण है कि मैथ्यू मार्क का उपयोग कर रहा है। अब, मैं जो सोचता हूँ, यह वह नहीं है जो हर कोई सोचता है, लेकिन पापियास, दूसरी शताब्दी की शुरुआत में लिखते हुए, वह कहते हैं कि मैथ्यू ने सबसे पहले लॉजिया लिखा था, जिसका अक्सर अर्थ ईश्वर की वाणी या बातें हो सकता है। और मरकुस ने जो कुछ उस ने पतरस से सुना, उसे लिख लिया।

मुझे लगता है कि मैथ्यू ने संभवतः यीशु की कई बातें लिखी हैं। यह कुछ ऐसा हो सकता है जिसे हम क्यू कहते हैं, यह सामग्री मैथ्यू और ल्यूक द्वारा साझा की गई है। लेकिन फिर मैथ्यू कुछ कथात्मक सामग्री को भी शामिल करने में सक्षम था जो पीटर के अधिकार पर निर्भर था जब मार्क का सुसमाचार पीटर के अधिकार पर प्रकाशित हुआ था।

अब, ल्यूक और मैथ्यू, हालांकि वे ओवरलैप होते हैं, कुछ स्थान ऐसे हैं जहां मुझे लगता है कि अगर मैथ्यू के पास ल्यूक का पूरा सुसमाचार होता या ल्यूक के पास मैथ्यू का पूरा सुसमाचार होता तो उन्होंने अलग तरह से लिखा होता। तो फिर, यह एक और लंबी कहानी है। लेकिन केवल

यह कहने के लिए, हमें इन सभी चीजों पर अटकलें लगाने की ज़रूरत नहीं है, जैसा कि लोग कभी-कभी करते हैं, मार्क को संपादित करने से पहले मैथ्यू कैसा दिखता होगा इत्यादि।

इनमें से बहुत सी चीजें हम नहीं जानते हैं, और विद्वान उन चीजों का पता लगाना पसंद करते हैं जिन्हें हम नहीं जानते हैं, और इसमें कुछ भी गलत नहीं है। लेकिन व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए, हम सुसमाचार के अध्ययन के साथ आगे बढ़ने के लिए पर्याप्त जानते हैं। कुछ अन्य 19वीं और 20वीं सदी के आरंभिक विद्वानों ने, स्रोत आलोचना से निपटने के बाद, रूप आलोचना पर ध्यान केंद्रित किया।

सुसमाचारों में विभिन्न विशिष्ट साहित्यिक रूप हैं। जाहिर है, हमारे पास दृष्टान्त और यीशु की कई तरह की बातें हैं। हे कफरनहूम, तुम पर धिक्कार है, यह एक दैवज्ञ के समान है।

लेकिन फॉर्म के आलोचकों ने यह निर्धारित करने का प्रयास किया कि प्रारंभिक चर्च के प्रचार में इस सामग्री का उपयोग कैसे किया गया था और यह निर्धारित करने का प्रयास किया गया था कि हम किस सामग्री को उसके वर्तमान स्वरूप में यीशु के पास सबसे विश्वसनीय रूप से पा सकते हैं। कभी-कभी उन्होंने ऐसे तर्कों का उपयोग किया जो वास्तव में बहुत अच्छे नहीं थे, लेकिन कभी-कभी उन्होंने ऐसे तर्कों का उपयोग किया जिनका इतिहासकार उपयोग कर सकते थे। उदाहरण के लिए, यदि हमारे पास सामग्री या ऐसी सामग्री है जो न केवल एक स्रोत में प्रमाणित है, बल्कि यह मैथ्यू और ल्यूक के बीच साझा सामग्री में प्रमाणित है, यह मार्क में भी प्रमाणित है।

उदाहरण के लिए, यीशु ने दृष्टान्त सुनाए। यीशु ने राज्य के बारे में बात की। यह कुछ ऐसा है जिसे इतिहासकार कहेंगे, खैर, यह बहुत अच्छी तरह से प्रमाणित है।

फिर, मुझे लगता है कि शर्मिंदगी की कसौटी एक काफी अच्छी कसौटी है। और कुछ ऐसा जो आरंभिक चर्च वास्तव में कहना नहीं चाहेगा, बताना नहीं चाहेगा। उदाहरण के लिए, चर्च ने यीशु को यहूदियों का राजा होने का दावा करने के आरोप में सूली पर चढ़ाने की बात नहीं बनाई होगी, क्योंकि इसका मतलब था कि उसे उच्च राजद्रोह के आरोप में फाँसी दी गई थी।

रोमन साम्राज्य में उसका अनुसरण करने वाला कोई भी व्यक्ति देशद्रोही माना जा सकता था। यह ऐसी चीज़ नहीं है जिसे आप बनाना चाहेंगे। आप यह भी नहीं चाहेंगे कि यीशु को जॉन बैपटिस्ट द्वारा बपतिस्मा दिया जाए, जो पापों की क्षमा के लिए पश्चाताप के बपतिस्मा का उपदेश दे रहा था।

अब, यीशु ऐसा इसलिए नहीं करता क्योंकि उसे क्षमा करने की आवश्यकता है, बल्कि यीशु उस बपतिस्मा में अपने लोगों के साथ पहचान करता है। और फिर, आप शायद यह नहीं चाहेंगे कि यीशु यह कहे, हे पिता, मेरी नहीं, तेरी इच्छा पूरी हो। या यीशु ने कहा, कोई उस दिन को नहीं जानता, न उस घड़ी को, यहां तक कि सूर्य को भी नहीं।

ये ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें आरंभिक चर्च शायद बनाना नहीं चाहता होगा। फ़िलिस्तीनी पर्यावरण या यहूदी और गैलीलियन पर्यावरण की कसौटी भी है। यानी, गॉस्पेल में ऐसी कई विशेषताएं हैं जो यीशु के परिवेश में फिट बैठती हैं, लेकिन बाद के चर्च के वातावरण में फिट नहीं बैठती हैं।

खैर, इतिहासकार यह नहीं कहेंगे कि ये बातें मनगढ़ंत थीं। अब, विश्वास के दृष्टिकोण से, हम उन चीज़ों को स्वीकार करते हैं। आप जानते हैं, हमें सुसमाचार लेखकों पर भरोसा है।

कभी-कभी आपको बस भरोसा करने की ज़रूरत होती है। विद्वान कभी-कभी उस चीज़ के साथ काम करते हैं जिसे संदेह का व्याख्याशास्त्र कहा जाता है। और जब मैं ऐतिहासिक जीसस स्कॉलरशिप में अपनी एक पुस्तक के लिए उस पर काम कर रहा था, तो आप जानते हैं, मैं सिर्फ यह कहने के लिए विद्वतापूर्ण पद्धति का उपयोग कर रहा था, ठीक है, यहां वह महत्वपूर्ण न्यूनतम है जो इतिहासकार कह सकते हैं।

इसका मतलब यह नहीं है कि हम वास्तव में केवल यही मानते हैं, क्योंकि हर कोई मानता है कि ऐतिहासिक तरीकों से आप जो जानते हैं उसका महत्वपूर्ण न्यूनतम हिस्सा वह सब नहीं है जो घटित हुआ है। और यदि आपके पास कोई विश्वसनीय स्रोत है, तो आप विश्वसनीय स्रोत पर निर्भर रह सकते हैं। लेकिन मैं इस तरीके में इतना फंस गया कि मेरी पत्नी मुझसे कुछ कहती और मैं उससे कहता, क्या तुम मुझे उस दावे का सबूत दे सकती हो? अब, मैं आपको आश्चस्त कर सकता हूं कि, ठीक है, मुझे नहीं पता, हो सकता है कि आपकी संस्कृति अलग हो, लेकिन मैं निश्चित रूप से इसके लिए परेशानी में पड़ गया।

और मुझे यह समझना पड़ा कि यदि आपके पास कोई विश्वसनीय स्रोत है, तो आपको हमेशा बाहरी साक्ष्य की आवश्यकता नहीं होती है। वह स्रोत ही प्रमाण है। और हमें इसे बहुत गंभीरता से लेने की ज़रूरत है, खासकर जब हमें वह स्रोत अन्य मामलों में विश्वसनीय लगता है।

इन पारंपरिक आलोचनात्मक दृष्टिकोणों में कमजोरियाँ हैं। और यह विशेष रूप से तब था जब वे कहते थे, ठीक है, आप जानते हैं, यदि यह इस मानदंड पर फिट नहीं बैठता है, तो यह सटीक नहीं है। उदाहरण के लिए, उन्होंने असमानता की कसौटी का उपयोग करने का प्रयास किया।

यदि अन्य यहूदी शिक्षकों द्वारा अक्सर कुछ कहा जाता था, तो उन्होंने कहा, ठीक है, फिर यदि इसका श्रेय यीशु को दिया जाता है, तो हम नहीं जानते कि यीशु ने वास्तव में यह कहा था। हो सकता है कि यह अन्य लोगों से उधार लिया गया हो। या यदि बाद वाला चर्च इससे सहमत था, तो उन्होंने कहा, ठीक है, तब यीशु ने शायद यह नहीं कहा क्योंकि बाद वाले चर्च ने इसे उसके लिए बनाया होगा।

अब, यदि मेरे छात्र बाहर जाते हैं और मेरी कही गई कुछ बातों से सहमत होते हैं, तो क्या हमें यह कहना चाहिए कि मैंने वो बातें कभी नहीं कही क्योंकि मेरे छात्र उनसे सहमत थे? यह उस तरह के दृष्टिकोण का खतरा है। या अगर मैं कुछ बातों से सहमत हो जाऊं जो कुछ अन्य विद्वानों ने कही हैं, तो क्या इसका मतलब यह होगा कि मैंने वास्तव में उन्हें नहीं कहा था, कि वे बस अन्य विद्वानों से उधार ली गई थीं? तो वह मानदंड जो गॉस्पेल की विश्वसनीयता के विरुद्ध इस्तेमाल किया गया था, वास्तव में अधिकांश विद्वानों द्वारा किनारे कर दिया गया है। इसका आमतौर पर उपयोग नहीं किया जाता।

और लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले कई मानदंड, रूडोल्फ बुल्टमैन ने 19वीं शताब्दी के मध्य में परंपराओं का विस्तार या अनुबंध कैसे किया गया, इसके बारे में बात करने के लिए कई मानदंडों का उपयोग किया। लेकिन 1969 में ईपी सैंडर्स ने दिखाया कि वे त्रुटिपूर्ण थे। उदाहरण के लिए, बुल्टमैन को ही लें जो इस बात से सहमत था कि मैथ्यू ने मार्क का इस्तेमाल किया था।

लेकिन मैथ्यू, उन्होंने कहा, आप जानते हैं, बाद के स्रोत पहले के स्रोतों का विस्तार करते हैं। मैथ्यू अक्सर मार्क की कहानियों को संक्षिप्त करता है। इसलिए, यह बुल्टमैन के अपने मानदंडों पर भी काम नहीं करता है।

इसलिए, अधिकांश विद्वान इसके विरुद्ध चले गए हैं। यीशु के बारे में रहस्यमय धर्मों आदि से लिए गए रूपांकनों के बारे में आप इंटरनेट पर जो लोकप्रिय प्रकार की बातें देखते हैं, वे विद्वानों की बातचीत में भी नहीं हैं। वो तो बस लोगों की कल्पना है।

अधिकांश समानताएँ जो लोग बनाते हैं वे समानताएँ हैं जो उन्होंने यीशु से ली हैं और रहस्यमय धर्मों में पढ़ी हैं और रहस्यमय धर्मों का अध्ययन किया है। ये बातें बाद की हैं, सदियों बाद की, जब रहस्यमय धर्म ईसाई धर्म से उधार ले रहे थे क्योंकि यह लोकप्रिय था। और उनमें से कुछ बिल्कुल भी प्राचीन काल के नहीं हैं।

वास्तव में, उनमें से कई इंटरनेट पर मौजूद आधुनिक लोगों से बने हैं। किसी भी स्थिति में, 1970 के दशक में विद्वान उस ओर आगे बढ़े, जिसे रिडेक्शन इतिहास कहा जाता था, इतिहास का संपादन। तो, आपके पास ये विभिन्न स्रोत हैं।

आप उन लोगों के साथ क्या करेंगे? मेरा मतलब है, उदाहरण के लिए, यह आपको उपदेश देने में कैसे मदद करता है? यदि मैथ्यू के पास मार्क में कुछ है, यदि वह शब्दों को बदलता है, तो यह हमें क्या बताता है? मैथ्यू मार्क से कैसे उपदेश दे रहा है? ल्यूक मार्क से कैसे उपदेश दे रहा है? और यदि मैथ्यू लगातार कोई विशेष परिवर्तन करता है, तो शायद हम उससे सीख सकते हैं। उदाहरण के लिए, मैथ्यू स्वर्ग के राज्य की बात करता है। मार्क परमेश्वर के राज्य की बात करता है।

मैथ्यू परमेश्वर के राज्य का उपयोग केवल चार या पाँच बार करता है। हर जगह वह अभिव्यक्ति बदलता है, स्वर्ग का राज्य। ऐसा क्यों? क्या यह हमें कुछ धार्मिक शिक्षा देता है? या हो सकता है कि मैथ्यू इसे ऐसे तरीके से रख रहा हो जो उसके दर्शकों के लिए अधिक परिचित हो।

मार्क शायद रोम या उसके जैसे किसी स्थान पर दर्शकों के लिए लिख रहे थे। मार्क के श्रोताओं में कई गैर-यहूदी शामिल हैं जिन्हें पता नहीं होगा कि स्वर्ग के राज्य का क्या मतलब है। तो, मार्क एक तरह से अपने दर्शकों के लिए इसका अनुवाद करता है।

मैथ्यू इसे यहूदी दर्शकों के लिए वापस अनुवादित कर सकता है। ये ऐसी चीजें हैं जिनमें हम अंतर देख सकते हैं। हम हमेशा नहीं जानते कि क्यों।

लेकिन गॉस्पेल में स्पष्ट रूप से और निर्विवाद रूप से मतभेद हैं। किसी को भी यह न कहने दें कि उनके बीच कोई मतभेद नहीं है। मार्क में, यीशु एक अंजीर के पेड़ को श्राप देते हैं।

वह अंदर जाता है और मंदिर की सफाई करता है। यीशु के शिष्यों ने अंजीर के पेड़ को सूखा हुआ पाया। और फिर यीशु विश्वास का पाठ देते हैं।

मैथ्यू में, यीशु ने एक अंजीर के पेड़ को श्राप दिया था। अंजीर का पेड़ तुरन्त सूख गया। यीशु आस्था का पाठ पढ़ाते हैं और फिर मंदिर को साफ़ करते हैं।

अब, क्या इसका मतलब यह है कि यीशु ने दो अंजीर के पेड़ों को श्राप दिया था, और एक तुरन्त सूख गया और फिर जब तक वे वापस आए तब तक दूसरा भी सूख गया था? और यीशु दोनों बार विश्वास का एक ही पाठ देते हैं? कभी-कभी शिष्य चीजें प्राप्त करने में धीमे होते थे, लेकिन आम तौर पर इतने धीमे नहीं होते थे। यहां मेरी सोच यह है कि मैथ्यू वही कर रहा है जो वह अक्सर करता है। वह चीजों को तार्किक क्रम में व्यवस्थित करता है।

अब, मार्क भी हमें कुछ बताता है। मेरा मतलब है, यीशु एक काल्पनिक दृष्टांत के रूप में एक अंजीर के पेड़ को श्राप देते हैं और फिर अंदर जाते हैं और मंदिर को साफ़ करते हैं, जिसमें एक अर्थ में पत्तियां तो होती हैं लेकिन फल नहीं होते हैं। वे पश्चाताप का फल नहीं भोग रहे हैं।

वे परमेश्वर की सेवा का फल नहीं भोग रहे हैं। लेकिन मैथ्यू के मामले में, वह चीजों को बहुत व्यवस्थित तरीके से व्यवस्थित करना पसंद करता है। और फिर, जो हमने पहले देखा, वह प्राचीन जीवनियों में सामान्य है।

प्राचीन जीवनियों ने हर समय ऐसा किया। कोई परेशानी की बात नहीं। यह सिर्फ शैली का हिस्सा है।

हम समानांतर अनुच्छेदों की तुलना परमेश्वर के राज्य और स्वर्ग के राज्य इत्यादि से कर सकते हैं। संपादकीय इतिहास या पुनर्लेखन इतिहास बस यही पूछता है कि क्यों। एक विशेष परिवर्तन क्यों किया गया? समस्या यह थी कि आलोचनात्मक आलोचना करने वाले कुछ शुरुआती आलोचकों ने इसे बहुत आगे तक बढ़ा दिया था।

उन्होंने मार्क और क्यू के आधार पर सब कुछ समझाने की कोशिश की, और उन्होंने यह मान लिया कि जो कुछ भी वे उन स्रोतों से प्राप्त नहीं कर सकते थे उसका आविष्कार किया गया होगा, जैसे कि वे एकमात्र स्रोत थे जो उस समय अस्तित्व में थे, सिर्फ इसलिए कि वे ही एकमात्र स्रोत हैं हम सोचते हैं कि आज हमारे पास है। साथ ही, उन्होंने कहा कि जो कुछ भी लेखक की शैली में फिट बैठता है वह लेखक द्वारा ही बनाया गया होगा। लेखक हर समय चीजों को अपने अंदाज में रखते हैं।

यह प्राचीन साहित्य में मानक अभ्यास था। जब ल्यूक मार्क का उपयोग करता है तो वह मार्क की शैली बदल देता है। अतः ये बातें पुनर्वित्त आलोचकों की दृष्टि में बहुत सटीक नहीं थीं।

साथ ही, जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, यह और अधिक दिलचस्प होता जाएगा। अभी, यह पाठ्यक्रम का वह हिस्सा है जो सबसे अधिक थकाऊ है, शायद, यदि यह ऐसा कुछ नहीं है जिसमें आपकी विशेष रुचि हो। पाठ्यक्रम का बाकी हिस्सा और अधिक रोमांचक हो जाएगा।

लेकिन मैं सिर्फ इन चीजों से निपटना चाहता था क्योंकि ये मानक चीजें हैं जिन्हें परंपरागत रूप से निपटाया जाता है, कम से कम पश्चिमी कक्षाओं आदि में। लेकिन मैं उन पर बहुत अधिक समय खर्च नहीं करने जा रहा हूँ। मतभेदों का मतलब अविश्वसनीयता नहीं है।

अक्सर, प्राचीन इतिहासकारों के बीच मतभेद होते हैं, और फिर भी आधुनिक इतिहासकार ऐतिहासिक जानकारी के लिए उनका उपयोग करते हैं। वे इसे कोई समस्या नहीं मानते। जब लूथर गॉस्पेल पढ़ रहा था तो उसने यह नहीं सोचा था कि यह कोई समस्या है।

कमी की आलोचना के साथ एक और समस्या यह है कि सभी परिवर्तन धार्मिक रूप से प्रेरित नहीं होते हैं। जैसा कि हमने बताया, ल्यूक मार्क के व्याकरण को साफ़ करता है। मैथ्यू मार्क की भाषा को और अधिक सटीक बनाता है जब वह हेरोदेस एंटीपस को एक राजा के रूप में नहीं, बल्कि एक टेटार्क के रूप में वर्णित करता है, या विशेष रूप से उसका वर्णन इस तरह करता है।

स्वर्ग का राज्य इसे मैथ्यू के श्रोताओं से जोड़ने का एक तरीका है। इसके अलावा, मैथ्यू कभी-कभी स्थान की कमी के लिए मार्क को संक्षिप्त कर देता है। मार्क में, लकवाग्रस्त व्यक्ति को छत पर छोड़ दिया जाता है, और यीशु उसके पापों को क्षमा कर देते हैं और उसे ठीक कर देते हैं।

मैथ्यू में, यीशु ने उसके पापों को माफ़ कर दिया और उसे ठीक कर दिया, लेकिन उसने छत का उल्लेख नहीं किया। क्या इसका मतलब यह है कि धार्मिक रूप से मैथ्यू निजी संपत्ति के विनाश के खिलाफ है? मुझे लगता है कि शायद मैथ्यू ने जगह की कमी के कारण इसे छोड़ दिया है, और वह इसे संक्षिप्त कर रहा है और कथा के मुख्य धार्मिक बिंदु तक पहुंच रहा है। पुरातन काल में पैराफ्रेज़ एक मानक अलंकारिक अभ्यास था।

जब आप वृत्तांतों को दोबारा बताते हैं, तो आपको उन्हें अपने शब्दों में बताने में सक्षम होना चाहिए। इसलिए, संशयवादी और गलत सूचना देने वाले रक्षक कभी-कभी वही गलती करते हैं, यह मानते हुए कि शब्दों या अनुक्रम में अंतर का मतलब है कि पदार्थ गलत है। प्राचीन जीवनी या इतिहासलेखन की शैली के बारे में हम जो जानते हैं, उससे यह मेल नहीं खाता।

लेकिन पुनर्लेखन आलोचना के साथ सबसे बड़ी समस्या यही थी। एक लेखक क्या शामिल करता है यह उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि एक लेखक क्या अपनाता है। इसलिए, अगर मैं एक कहानी बता रहा हूँ जो मेरी पत्नी ने मुझे बताई है, तो यह महत्वपूर्ण नहीं है कि मैं उसकी कहानी में क्या बदलता हूँ।

यह भी महत्वपूर्ण है कि मैं उसकी कहानी से क्या सीखता हूँ। मेरा मतलब है, मैं उसकी कहानी एक कारण से बता रहा हूँ। इसलिए आज, जोर केवल इस बात पर ध्यान देने से आगे बढ़ गया है कि एक लेखक क्या बदलता है, जैसे कि मैथ्यू के सुसमाचार के सभी पाठक या मैथ्यू के सुसमाचार के श्रोता क्योंकि आम तौर पर एक व्यक्ति इसे पढ़ेगा और मण्डली इसे सुनेगी।

यह केवल महत्वपूर्ण नहीं है कि श्रोता मार्क से क्या बदल कर सुनेंगे जैसे कि मार्क उनके सामने है। लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि मैथ्यू का पूरा सुसमाचार एक साथ कैसे फिट बैठता है, मार्क का पूरा सुसमाचार एक साथ कैसे फिट बैठता है, इत्यादि। इसलिए, सुसमाचार के माध्यम से विषयों का पता लगाना, और यही मुख्य दृष्टिकोण है जिसका हम उपयोग करने जा रहे हैं।

हम मुख्य रूप से इन अन्य प्रकार के विवरणों पर ध्यान केंद्रित नहीं करने जा रहे हैं। हम मुख्य रूप से इस बात पर ध्यान केंद्रित करने जा रहे हैं कि मैथ्यू हमसे क्या कहना चाहता है, और मैथ्यू हमें क्या सिखाना चाहता है। अब, सुसमाचार की विश्वसनीयता के संदर्भ में, हम कुछ और प्रासंगिक बिंदुओं की ओर बढ़ रहे हैं।

सुसमाचार कितने विश्वसनीय हैं? क्या आप उनकी प्रामाणिकता का बचाव कर सकते हैं? ऐतिहासिक प्रश्न पर लौटते हुए, यहां कुछ ऐसे बिंदु दिए गए हैं जिन पर विद्वान समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं। शैली, सुसमाचार जीवनियाँ हैं और इसलिए उनका ऐतिहासिक उद्देश्य है। गॉस्पेल उन लिखित स्रोतों का उपयोग करते हैं जो उनके द्वारा वर्णित घटनाओं के तुरंत बाद लिखे गए हैं।

सुसमाचारों में प्रत्यक्षदर्शियों से उत्पन्न ध्वनि मौखिक परंपरा भी है। हम इसे विशेष रूप से ल्यूक अध्याय 1, श्लोक 1 से 4 को देखकर देख सकते हैं। सभी सुसमाचारों के कारण, ल्यूक ही वह है जो वास्तव में हमें अपनी कार्यप्रणाली देता है, जो इसे शुरुआत में हमारे लिए प्रस्तुत करता है। श्लोक 1 में, हमें पता चलता है कि वह लिखित स्रोतों का उपयोग करता है।

कम से कम लिखित स्रोतों तक उसकी पहुंच है। श्लोक 2, उसके पास प्रत्यक्षदर्शियों के मौखिक स्रोतों तक पहुंच है। उन्होंने उनका प्रयोग किया।

श्लोक 3 में, ल्यूक ने अपनी जांच से इसकी पुष्टि की। पद 4 में, ल्यूक बातें बनाने से बच नहीं सका क्योंकि सामग्री प्रारंभिक चर्च में पहले से ही व्यापक रूप से ज्ञात थी। अब, अगर आपको पहली बार में यह सब नहीं मिला तो आपको चिंता करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि यह मेरी रूपरेखा है जिसे मैं कुछ अधिक विस्तार से कवर करने वाला हूँ।

ल्यूक की डेटिंग काफी सवालों के घेरे में है। अधिकांश विद्वान ल्यूक को 62 और 90 के बीच का मानते हैं। अब, रूढ़िवादी विद्वान ल्यूक को इस सीमा के पार का मानते हैं, वास्तव में रूढ़िवादी विद्वान भी।

लेकिन कुछ रूढ़िवादी विद्वान ल्यूक को 60 के दशक का मानते हैं। कुछ लोग उन्हें 70 के दशक का बताते हैं। कुछ लोग तो उन्हें 80 के दशक का भी बताते हैं।

कुछ अन्य विद्वान भी हैं जो ल्यूक के बाद का भी उल्लेख करते हैं, ये अल्पसंख्यक विद्वान हैं, आम तौर पर रूढ़िवादी विद्वान नहीं। लेकिन 62 से पहले के संदर्भ में, विद्वान आमतौर पर ल्यूक को 62 से पहले नहीं बताते हैं क्योंकि अधिनियम की पुस्तक वास्तव में वर्ष 62 के आसपास समाप्त होती है। लेकिन किसी भी मामले में, अधिनियम ल्यूक और अधिनियम का एक साथ दूसरा खंड है।

लेकिन जब तक ल्यूक लिखता है, मैं लगभग 75 की औसत तारीख लेने जा रहा हूँ, जो कि उस सीमा के बारे में भी होती है जो मुझे लगता है कि शायद सही है। लेकिन आप किसी भी तरफ जा सकते हैं। यह 60 के दशक में हो सकता है।

कुछ लोगों ने इसके लिए तर्क भी दिया है। यह बाद में भी हो सकता है। लेकिन इस रेंज में कहीं न कहीं, मैं लगभग 75 की औसत रेंज ले रहा हूँ।

जब तक ल्यूक लिखता है, तब तक बहुत से लोग यीशु के बारे में लिख चुके होते हैं। हमने वह पहले देखा था। इस प्रकार घटनाओं के लगभग साढ़े चार दशक के भीतर।

अब, अगर कोई आए और ऐसी बातें कहे जिनके बारे में हम साढ़े चार दशक पहले से जानते थे तो वास्तव में ऐसा नहीं हो सकता था, वे बातें जिनके बारे में हम अपने माता-पिता से जानते थे। क्या हमसे साढ़े चार दशक पहले की घटनाएँ भूलने की बीमारी में डूबी हुई हैं? हममें से कुछ, मुझे आपको अपनी उम्र बताने में नफरत है, लेकिन हममें से कुछ लगभग साढ़े चार दशक पहले के थे। और हममें से जो नहीं थे, हम उन लोगों को जानते हैं जो थे।

तो, यह प्रत्यक्षदर्शियों की जीवित स्मृति में है। यह कुछ ऐसा है जो इतिहास के अंतर्गत है जिसे सत्यापित किया जा सकता है। ल्यूक श्लोक दो में मौखिक स्रोतों की उपलब्धता की भी बात करता है।

वह कहते हैं, जैसे ये स्रोत हमें उन लोगों द्वारा सौंपे गए थे जो पहले से ही प्रत्यक्षदर्शी और शब्द के सेवक थे। और मौखिक परंपरा के बारे में तकनीकी संदर्भ में, पेरिडोटॉमी, गुजरती हुई भाषा, उस तरह की सावधानीपूर्वक शिक्षा से संबंधित है जो शिक्षकों द्वारा छात्रों को दी जाती है, जैसे कि दार्शनिक स्कूलों में या इसी तरह, जहां उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे आगे बढ़ें। शिक्षक का शिक्षण। अब, मेरे पास मेरी पड़ोसी अन्ना गुलिक की तस्वीर है, जो अब, मेरा मानना है, 96 वर्ष की है।

और अन्ना, भले ही संयुक्त राज्य अमेरिका से हैं, भले ही संयुक्त राज्य अमेरिका बहुत अच्छी याददाश्त के लिए नहीं जाना जाता है क्योंकि अब हम सब कुछ कंप्यूटर पर करते हैं, लेकिन अन्ना, 96 वर्ष की हैं। वह इन सबसे पहले पैदा हुई थी। उनका जन्म टेलीविजन से पहले हुआ था।

मुझे लगता है कि वह रेडियो से पहले पैदा हुई थी, निश्चित रूप से उससे भी पहले जब लोग रेडियो का बहुत अधिक उपयोग करते थे। उनका जन्म संयुक्त राज्य अमेरिका के उस युग में हुआ था जब लोग अपने सामने के बरामदे पर बैठते थे और कहानियाँ सुना करते थे। और वे पारिवारिक कहानियाँ सुनाते थे।

और उसे अपने परिवार की कहानियाँ याद हैं जो 1700 के दशक की हैं। और मैं वापस जाकर इनमें से कुछ जानकारी को बाहरी स्रोतों से सत्यापित करने में सक्षम हूँ। इसलिए मौखिक परंपरा को महत्व देने वाली संस्कृतियों में मौखिक परंपरा को सैकड़ों वर्षों तक सटीक रूप से पारित किया जा सकता है।

और यह कुछ संस्कृतियों में भी सच है जो आज इसे महत्व नहीं देते लेकिन अतीत में इसे महत्व देते थे। अब, यह कितना सटीक है यह संस्कृति पर निर्भर करता है और इसे प्रसारित करने वाले लोगों पर निर्भर करता है। लेकिन मौखिक प्रसारण कितना सही था? खैर, मैं इस विषय पर जो कुछ कहने जा रहा हूँ उसकी एक रूपरेखा यहां दी गई है।

हमें स्मरण को प्राचीन काल में देखने की जरूरत है। हमें गॉस्पेल में अरामी लय और चर्च में प्रत्यक्षदर्शियों की प्रमुखता के लिए नोट्स और कहावतों के संग्रह और साक्ष्य को देखने की जरूरत है। मैं मुख्य रूप से प्राचीन काल में याद करने पर ध्यान केंद्रित करने जा रहा हूँ क्योंकि यह वह हिस्सा है जहां आमतौर पर मेरे छात्र इसके बारे में पहले से नहीं जानते हैं, उनके पास पहले से ही इसके बारे में जानकारी नहीं है।

यह आमतौर पर अन्य पाठ्यपुस्तकों आदि में शामिल नहीं होता है। लेकिन विशेष रूप से मौखिक अवधि, जब सूचना को लिखे जाने से पहले केवल मौखिक रूप से प्रसारित किया जा रहा था, यीशु के सार्वजनिक मंत्रालय और मार्क के लेखन के बीच की अवधि से अधिक लंबी नहीं हो सकती। यह संभवतः सबसे लंबा समय हो सकता है।

और औसतन, विद्वान आमतौर पर इसकी आयु लगभग 40 वर्ष बताते हैं। यह उससे काफी कम हो सकता है। हमें पता नहीं।

लेकिन औसतन, विद्वान आमतौर पर इसकी आयु लगभग 40 वर्ष बताते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि मौखिक परंपरा अभी भी जारी नहीं थी। दूसरी सदी की शुरुआत में पापियास का कहना है कि यह उनके समय में भी जारी था।

और वास्तव में उन्हें लिखित गॉस्पेल की तुलना में मौखिक परंपरा अधिक पसंद थी। लेकिन जैसा भी हो, चीजों को लिखे जाने से पहले की विशेष मौखिक अवधि एक पीढ़ी से अधिक नहीं हो सकती। यादें कितनी सटीक हो सकती हैं, इस संदर्भ में, याद रखने वाले कहानीकार घंटों तक कहानियाँ सुना सकते हैं।

मैं इन्हें और भी विस्तार से करने जा रहा हूँ। वक्ता, वक्तृत्व कला के पाँच बुनियादी कार्यों में से एक था अपने भाषण को याद रखने में सक्षम होना और उसे स्मृति से दोहराने में सक्षम होना। कभी-कभी ये भाषण कुछ घंटों के होते थे।

प्रारंभिक शिक्षा याद रखने पर जोर देती है। गुरुजनों के शिष्य, यही उनका प्राथमिक दायित्व था। उनसे अपेक्षा की गई थी कि वे अपने शिक्षक द्वारा बताई गई बातों को आगे बढ़ाने में सक्षम हों।

अक्सर ये बातें इस मौखिक परंपरा की एक पीढ़ी या दो पीढ़ियों के भीतर लिखी जाती थीं, कभी-कभी तो पहले भी। और फिर, गॉस्पेल के मामले में, हम नहीं जानते कि सबसे पहला क्या था। लेकिन हम जानते हैं कि यह मार्क के बाद का नहीं हो सकता, जिसे लिखा गया था।

कहानी कहने के संदर्भ में, यह सिर्फ शिक्षित लोगों के बीच नहीं था जो इन कहानियों को याद रख सकते थे। कई अनपढ़ चारण, जो लोग पढ़ या लिख नहीं सकते थे, संपूर्ण इलियड और ओडिसी सुना सकते थे। ये दो काफी लंबी किताबें हैं।

मेरा मतलब है, प्राचीन शब्दों में, इलियड 24 किताबें लंबी है। और ये प्राचीन भाट जिन्हें लोग अशिक्षित कहकर तिरस्कृत करते थे, अभिजात वर्ग द्वारा अशिक्षित कहकर तिरस्कृत करते थे, स्मृति से इन्हें दोहरा सकते थे। और वे कभी-कभी प्रदर्शन में थोड़ा बदलाव कर सकते थे, लेकिन वे हमेशा उसी मूल कहानी पर वापस चले जाते थे।

जो उन्हें कंठस्थ था. अब, सावधानीपूर्वक प्रशिक्षित स्मृतियों के संदर्भ में, मैं आपको एक चरम उदाहरण देने जा रहा हूँ। इसका मतलब औसत होना नहीं है, बल्कि आपको यह दिखाना है कि प्राचीन काल में स्मृतिविद्या या चीजों को याद रखना कितना महत्वपूर्ण था।

सेनेका द एल्डर ने कहा, आप जानते हैं, जब मैं छोटा था, मेरी याददाश्त अब की तुलना में बहुत बेहतर थी। जब मैं छोटा था, तो मैं 2,000 नामों को ठीक उसी क्रम में दोहरा सकता था जिस क्रम में मैंने उन्हें अभी सुना था। मैं मुझे दिए गए 200 श्लोक तक उल्टा सुना सकता था।

उन्होंने कहा, ठीक है, अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ, मेरी याददाश्त इतनी अच्छी नहीं है, लेकिन मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करूँगा। और फिर वह अपनी पुस्तक, द कॉन्ट्रोवर्सिया में 100 से अधिक भाषणों के लंबे खंडों का वर्णन करने के लिए आगे बढ़ते हैं, जो उन्होंने एक पीढ़ी पहले वक्तृत्व विद्यालय में अपने सहपाठियों से सुने थे। इसलिए, दशकों बाद, वह अपने बुढ़ापे में उन अभ्यास भाषणों को दोहरा रहे हैं जो उन्होंने अपनी युवावस्था में अपने सहयोगियों से सुने थे।

अब मेरी याददाश्त उतनी अच्छी नहीं है. मुझे याद है कि मैंने अपनी गृहशास्त्र कक्षा में क्या उपदेश दिया था। मुझे याद नहीं कि किसी और ने क्या उपदेश दिया था।

लेकिन सेनेका द एल्डर ऐसा कर सकती थी। वह असाधारण थे, लेकिन अन्य भी हैं। हमने एक ऐसे व्यक्ति के बारे में पढ़ा जो पूरे दिन नीलामी सुनता था, और दिन के अंत में, वह बेची गई प्रत्येक वस्तु, जिस कीमत पर इसे बेचा गया था, और जिस व्यक्ति को इसे बिना किसी नोट के बेचा गया था, उसे दोहरा सकता था।, सिर्फ स्मृति से.

या कोई अन्य व्यक्ति जो कविता पढ़ने गया था। आगे वाला व्यक्ति कविता पढ़ रहा था, और पढ़ने के अंत में पीछे वाला व्यक्ति उछल पड़ा और बोला, यह साहित्यिक चोरी है। वह कविता मैंने लिखी थी.

तुमने मेरी कविता चुरा ली. और सामने वाला व्यक्ति हकला रहा था क्योंकि उसे नहीं पता था कि उसे क्या करना है। वह कैसे साबित कर सकता है कि कविता उसने लिखी है? और फिर पीछे वाले व्यक्ति ने कहा, नहीं, मैं तो मजाक कर रहा हूँ।

मैं बस आपको यह दिखाना चाहता था कि मेरी याददाश्त कितनी अच्छी है। जब आप इसे पढ़ रहे थे तो मैंने इसे याद कर लिया। तो, उन्होंने साबित कर दिया था, उन्होंने कहा, मैं साबित कर सकता हूँ कि यह मेरा है क्योंकि उन्होंने इसे सुनाया था।

लेकिन उन्होंने इसे इसलिए सुनाया क्योंकि पढ़ते समय उन्होंने इसे याद कर लिया था। वह सिर्फ दिखावा कर रहा था। यह स्मृति पर जोर है जो कम से कम आज पश्चिम में स्मृति पर जोर से कहीं अधिक है।

कुछ संस्कृतियों में, हम अभी भी स्मृति पर भारी जोर देते हैं। कुछ जगहों पर जहां लोग अरबी भी नहीं समझ पाते और याद करके पूरा कुरान पढ़ लेते हैं। यह स्मृति पर जोर है जो पश्चिम में गायब है।

लेकिन दुनिया के कई हिस्सों में लोग याददाश्त पर ज़्यादा जोर देते हैं। यह एक बहुमूल्य उपहार है। भाषणों के संदर्भ में, फिर से, वक्ताओं के पांच बुनियादी कार्यों में से एक भाषण को याद रखने में सक्षम होना था।

यहां तक कि ऐसे भाषण भी जो अक्सर कई घंटों के होते थे। और छात्रों को ऐसा करने में सक्षम होने के लिए प्रशिक्षित किया गया था। अब, प्राचीन शिष्यों के संदर्भ में, प्राचीन दुनिया में उन्नत शिक्षा के दो मुख्य रूप थे।

एक था वाक्चातुर्य, वह था वाकपटुता, पेशेवर सार्वजनिक भाषण। दूसरा था दर्शनशास्त्र। वह अन्यजातियों के बीच था।

बेशक, यहूदी लोगों के बीच, उन्नत शिक्षा विशेष रूप से टोरा और धर्मग्रंथ पर केंद्रित थी। प्राचीन शिष्य, स्मृति, और नोट-लेखन। पहली एक से दो पीढ़ियों में याददाश्त सबसे अधिक प्रभावी थी।

चश्मदीदों की जीवित स्मृति के भीतर, उन चीजों को चश्मदीदों द्वारा सावधानीपूर्वक पारित किया जाएगा। और जो उनसे परामर्श लेते थे और उनसे प्रश्न पूछ सकते थे। इसे स्कूल सेटिंग में भी विशेष रूप से सावधानी से पारित किया गया था।

विद्यार्थियों ने रिहर्सल की और अपने शिक्षकों का संदेश सुनाया। खैर, ये दोनों कारक सुसमाचार के लिए प्रासंगिक हैं। चर्च कोई स्कूल सेटिंग नहीं थे।

यह कुछ बहस का मुद्दा रहा है, लेकिन चर्च कोई स्कूल सेटिंग नहीं थे। लेकिन इसके अधिकांश प्रमुख नेता, और मूल रूप से इस बात पर सभी सहमत हैं, इसके अधिकांश प्रमुख नेता न केवल प्रत्यक्षदर्शी थे, बल्कि वे एक शिक्षक के शिष्य थे। यीशु स्पष्ट रूप से एक शिक्षक थे।

उनके शिष्य स्पष्टतः शिष्य थे। शिष्यों से अपेक्षा की जाती थी कि वे अपने शिक्षक की शिक्षाएँ सीखें और उन्हें आगे बढ़ाने में सक्षम हों। फिर, इसके लिए उन्हें उन्हें शब्दशः पारित करने की आवश्यकता नहीं है।

संक्षिप्त व्याख्या आम चलन थी। हालाँकि, जैसा कि हम देखेंगे, सुसमाचार में यीशु की शिक्षाओं की बहुत सारी विशेषताएँ हैं जो उस तरह के शब्दों का उपयोग करती हैं जो गलील में इस्तेमाल किए गए होंगे, न कि उस तरह के शब्द जो बाद में इस्तेमाल किए गए होंगे। प्राचीन शिक्षा की सबसे प्रमुख विशेषता याद रखना थी।

यह बहुत प्रमुख है, और प्राथमिक स्तर पर बहुत व्यापक है। बुनियादी स्तर पर, वे प्रसिद्ध शिक्षकों की बातें याद रखेंगे। तो, फिर से, यह व्यापक संस्कृति का हिस्सा था।

और जिन लोगों के पास वह शिक्षा नहीं थी वे अभी भी उस संस्कृति का हिस्सा होंगे जहां याद रखना महत्वपूर्ण था। अधिक उन्नत स्तर पर, उच्च शिक्षा में, जो किशोरावस्था के मध्य में शुरू होगी, यीशु के शिष्य संभवतः किशोरावस्था के मध्य में थे। उच्च शिक्षा में वक्ताओं के लिए याद रखना, कई भाषणों और भाषणों के लिए उपयोगी अंशों को याद करना शामिल होगा।

लेकिन साथ ही, दार्शनिक स्कूलों में, आप स्कूल के संस्थापक की शिक्षाओं को याद कर लेंगे या अपने शिक्षक की शिक्षाओं को याद कर लेंगे। ग्रीक स्कूलों के संस्थापकों से जुड़ी बातें प्रत्येक स्कूल के सदस्यों द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रसारित की गईं। संस्थापकों की शिक्षाएँ अक्सर उनके समुदायों के लिए विहित हो गईं।

और अक्सर, शिष्य बाहर जाते थे और अपने शिक्षकों की शिक्षाओं को प्रकाशित करते थे। यह हम विभिन्न दार्शनिक विद्यालयों में देखते हैं। दूसरी शताब्दी की शुरुआत में लिखते हुए लुकियन, दार्शनिकों के बारे में बात करते हुए, एक दार्शनिक छात्र के बारे में बात करते हैं जो अपने दिमाग में पिछले दिन के व्याख्यानों का अभ्यास कर रहा है।

पाइथागोरस के बीच इस पर विशेष जोर दिया गया था। पाइथागोरस को, अपनी चली आ रही परंपरा के अनुसार, सुबह बिस्तर से उठने की अनुमति नहीं थी, जब तक कि वे वह सब कुछ दोहरा न लें जो उनके शिक्षक ने उन्हें एक दिन पहले सिखाया था। अब कल्पना कीजिए, यदि मैं जो आपको अभी दे रहा हूँ उस पर आपकी परीक्षा कल सुबह होगी इससे पहले कि आप बिस्तर से बाहर निकल सकें, आपको वह सब कुछ दोहराना होगा जो मैंने आपको सिखाया था।

इससे आपको याद रखने की महान कुशलता प्राप्त होगी। खैर, निःसंदेह, मैं आपकी परीक्षा नहीं ले रहा हूँ। मुद्दा यह है कि लोग वास्तव में शिक्षकों के शिष्यों से अपेक्षा करते थे कि वे अपने शिक्षकों की शिक्षाओं को दोहराने में सक्षम हों।

हर कोई पाइथागोरस तक नहीं गया, लेकिन यह महत्वपूर्ण था। और ये सिर्फ बातें नहीं थीं। यह कर्मों के बारे में भी था।

शिक्षक कुछ निश्चित तरीकों से कार्य करेंगे। शिष्य कहेंगे, ठीक है, यह बिल्कुल सही व्यवहार होना चाहिए क्योंकि मेरे शिक्षक ने ऐसा किया है। तो कभी-कभी आपके पास रब्बी होते थे जो कहते थे, ठीक है, मुझे पता है कि ऐसा व्यवहार टोरा के खिलाफ नहीं हो सकता है, कानून के खिलाफ नहीं हो सकता है, क्योंकि रब्बी ऐसा करते थे।

वास्तव में, तल्मूड में एक कहानी बताई गई है जहां एक रब्बी अपनी पत्नी के साथ कुछ समय अकेले बिताने के लिए तैयार हो रहा था और उसे अपने बिस्तर के नीचे एक शिष्य मिला। उसने कहा, तुम मेरे बिस्तर के नीचे क्या कर रहे हो? शिष्य ने उत्तर दिया कहा जाता है कि हमें अपने गुरु के आचरण से ही सब कुछ सीखना चाहिए। कहने की आवश्यकता नहीं कि शिष्य संकट में पड़ गया।

लेकिन कहानी का सार यह है कि शिष्यों का मानना था कि उन्हें वास्तव में अपने शिक्षकों के उदाहरण से सीखना होगा। और यह सिर्फ एक व्यक्ति की स्मृति नहीं थी। जैसे मैं एक व्यक्ति से कुछ कहता हूं, वे इसे दूसरे व्यक्ति से कहते हैं।

यह एक हजार लोगों तक जाता है, और जब आप वापस आते हैं, तो संभावना है कि उस श्रृंखला में से किसी ने इसे गड़बड़ कर दिया होगा। यह कोई चेन ट्रांसमिशन नहीं है। इसे ही नेट ट्रांसमिशन कहा जाता है।

अर्थात्, यह केवल एक व्यक्ति द्वारा इसे पारित करने पर निर्भर नहीं है, बल्कि शिष्यों का एक समुदाय था। उन सभी ने इस व्यक्ति की शिक्षा सुनी होगी। यदि किसी ने कुछ प्रकाशित किया या किसी ने कुछ ऐसा कहा जो शिक्षक ने कहा था जो वास्तव में शिक्षक की शिक्षाओं की भावना का खंडन करता है, तो कई अन्य लोगों द्वारा तुरंत उसका खंडन किया जाएगा।

उसी तरह, यदि आप किसी कक्षा में पढ़ा रहे हैं या किसी मंडली में पढ़ा रहे हैं, तो वहाँ बहुत से लोग होंगे जो आपकी बात सुनेंगे। कुछ लोग इसे गलत तरीके से समझ सकते हैं, लेकिन उम्मीद है कि वहां मौजूद अधिकांश लोगों को आपकी बात समझ में आ जाएगी। और इसलिए, यह सामुदायिक स्मृति है, जो इसे आगे बढ़ाने में मदद करती है।

अब नोट लेने के मामले में, हम निश्चित रूप से नहीं जानते हैं कि जब यीशु पढ़ा रहे थे तो एक शिष्य ने नोट लिया था। लेकिन यह निश्चित रूप से संभव है। शिष्य अक्सर अपने शिक्षक की शिक्षाओं को प्रकाशित करते हैं।

यही अपेक्षित था। जब यीशु ने शिक्षा देना शुरू किया तब तक यह आधी सहस्राब्दी से भी अधिक समय से चल रहा था। यह दोनों उन्नत विषयों में सच था।

यह दर्शनशास्त्र और अलंकारशास्त्र में सत्य था। मैं आपको केवल बयानबाजी से एक उदाहरण दूंगा। किंटिलियन वक्तृता के प्रोफेसर थे, अलंकार के प्रोफेसर थे।

किंटिलियन के छात्र, जो लड़के थे, ने उनके व्याख्यानों को इतने सावधानीपूर्वक नोट किया कि फिर उन्होंने बाहर जाकर उनके शिक्षण के नाम पर एक पुस्तक प्रकाशित की, जिस पर किंटिलियन ने उत्तर दिया, वास्तव में यह सटीक था। वास्तव में, यह और भी सटीक था क्योंकि उन्होंने अपने नोट्स में मेरी कुछ व्याकरण संबंधी गलतियाँ पकड़ लीं और काश उन्होंने पहले मुझे उन्हें ठीक करने दिया होता। इसलिए, यदि आप इस बात पर ध्यान देते हैं कि मैं अभी क्या कह रहा हूँ, तो आप जो कहते हैं उसके लिए आप जिम्मेदार हैं।

सुनिश्चित करें कि आपने उस पर अपना नाम भी डाला है। लेकिन फिर भी, उन्होंने बहुत सटीक नोट्स लिये। अब यहूदी शिष्य मौखिकता पर अधिक जोर देने के कारण अधिक नोट्स नहीं लेते थे।

लेकिन उन्होंने सामग्री के बड़े ब्लॉकों को याद करने में मदद करने के लिए कभी-कभी कुछ नोट्स को स्मरणीय उपकरणों के रूप में लिया। यीशु के शिष्यों में से, हम दूसरों के शैक्षिक स्तर के बारे में नहीं जानते हैं, हालाँकि मछुआरों की स्थिति अधिकांश लोगों की तुलना में किसानों से बेहतर थी। लेकिन निश्चित रूप से, एक कर संग्रहकर्ता के पास ऐसे नोट लेने का कौशल होगा।

और बाद में ईसाई परंपरा, फिर से पापियास ने सुझाव दिया कि वास्तव में, मैथ्यू एक कर संग्रहकर्ता, ने यीशु की शिक्षाओं पर नोट्स लिए और, कुछ बिंदु पर यीशु की शिक्षाओं पर नोट्स प्रकाशित किए। हम निश्चित रूप से नहीं जानते कि क्या उसने उन्हें उस समय लिया था या शायद उसने उन्हें पुनरुत्थान के बाद लिया था। लेकिन किसी भी मामले में, ये बातें शायद किसी के द्वारा तब लिखी जा रही थीं जब उनकी यादें अभी भी ताज़ा थीं क्योंकि यह बहुत आम बात थी, खासकर बाद में।

लेकिन फिर, यहूदी परंपरा में जहां वे नोट्स नहीं लेते थे, ऐसा इसलिए नहीं था क्योंकि उन्होंने कहा था कि शिक्षक ने क्या कहा, हमें इसकी परवाह नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने स्मृति कौशल पर जोर दिया। एक पीढ़ी, दो पीढ़ी बाद, यह भिन्न हो सकता है।

लेकिन तब तक, गॉस्पेल के मामले में, हम जानते हैं कि चीजें लिखी जा रही हैं। यीशु के यहूदी शिष्यों, यहूदी शिष्यों के बारे में हम अपने स्रोतों से जो कुछ भी जानते हैं, उसमें याद रखने पर बहुत जोर दिया जाता है। जोसेफस हमें बताता है कि धर्मग्रंथों को याद रखना बहुत महत्वपूर्ण था।

तो, याद रखना एक बड़ा मुद्दा था। एक रब्बी ने एक छात्र की प्रशंसा करते हुए कहा कि वह एक अच्छे पानी के टैंक की तरह है, जिसमें पानी की एक भी बूंद नहीं गिरती, उसे शिक्षक द्वारा सिखाई गई सभी बातें याद थीं। अब, कुछ लोग कहते हैं, ठीक है, यहूदी स्रोतों से प्राप्त यह साक्ष्य गॉस्पेल से बाद का है।

जोसेफस का साक्ष्य बहुत बाद का नहीं है। रब्बियों का प्रमाण बहुत बाद का है। लेकिन यह उन सभी अन्य साक्ष्यों के अनुरूप है जो हमारे पास प्राचीन स्रोतों से हैं।

फिर, यह हमारे साक्ष्य का केवल एक टुकड़ा है। लेकिन हमारे सभी साक्ष्य एक ही दिशा में बिंदु जोड़ते हैं। तो, अगर कोई आता है और कहता है, ठीक है, आप इस सबूत को स्वीकार नहीं कर सकते, आप उस सबूत को स्वीकार नहीं कर सकते, और सभी सबूतों को दूर कर देता है और कहता है, वास्तव में, सटीक जानकारी हमारे सभी के बिल्कुल विपरीत है साक्ष्य कहते हैं, मैं उस तर्क को बहुत अधिक विश्वसनीयता नहीं दूंगा।

सबूत यह है कि हमें उम्मीद करनी चाहिए कि सुसमाचार यीशु के बारे में जानकारी से भरे हुए हैं जिन्हें पूरी तरह से ऐतिहासिक आधार पर भी संरक्षित किया गया था। हमें यीशु के शिष्यों से क्या उम्मीद करनी चाहिए? हमें यीशु के शिष्यों से यह आशा क्यों करनी चाहिए कि वे शिक्षकों के

अन्य शिष्यों की तुलना में कम विश्वसनीय साबित होंगे, जबकि लगभग सभी विद्वान इस बात से सहमत हैं कि वह शिष्यों के साथ एक शिक्षक थे? जब मैथ्यू और ल्यूक द्वारा साझा की गई आम सामग्री शायद पहले से ही प्रसारित हो रही थी, जबकि कुछ प्रत्यक्षदर्शी जेरूसलम चर्च में नेतृत्व में थे, शायद केवल एक ही जीवनकाल ने यीशु को अंतिम नए नियम के दस्तावेज़ से अलग कर दिया था। इससे हमें क्या पता चलता है? इससे पता चलता है कि यह कोई ईसाई पूर्वाग्रह नहीं है जो हमें ऐसा मानने पर मजबूर करता है।

ईसाई बनने से पहले मैं नास्तिक था। मैं पूरी तरह से गैर-ईसाई पृष्ठभूमि से ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गया था। और मैं अब ईसाई हूँ।

मैं अब ईसाई परिसर से शुरू करता हूँ। लेकिन अगर कोई ईसाई परिसर से शुरुआत नहीं करता है, तो वह ऐतिहासिक साक्ष्यों को उसी तरह देख रहा है जैसे वह अन्य दस्तावेज़ों को देखता है। मेरा मानना है कि यदि वे इसे निष्पक्षता से कर रहे हैं, तो वे इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि हम यीशु के बारे में बहुत कुछ जानते हैं, यहां तक कि विशुद्ध ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भी।

अब, एक बार जब आप यीशु को प्रभु के रूप में स्वीकार कर लेते हैं, तो आपके पास विश्वास करने का और भी अधिक कारण होता है क्योंकि आप जानते हैं कि उन्होंने शिष्यों को आदेश दिया था। तुम जानते हो कि ये लोग आत्मा से परिपूर्ण थे। तुम जानते हो कि ये विश्वसनीय गवाह हैं।

लेकिन ऐसे व्यक्ति के लिए भी जो ईसाई नहीं हैं, हमारे पास यहां बहुत सारे सबूत हैं जिनसे उन्हें पता चलता है कि यीशु के बारे में हम जो जानते हैं वह विश्वसनीय है। और अगर यह सच है, तो ईसाई बनने का यह एक अच्छा कारण है।

यह मैथ्यू की पुस्तक, सत्र 1, द रिलायबिलिटी ऑफ द गॉस्पेल पर डॉ. क्रेग कीनर हैं।